# इकाई 10 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान एवं आपदा प्रबंधन*

## इकाई की रूपरेखा


10.0 परिचय

10.1 आपदा अध्ययनों में मानव विज्ञान का प्रयोग

10.2 श्रेष्ठतर प्रबंधन हेतु आपदाओं को परिभाषित करना

10.2.1 लोगों द्वारा आपदाओं की परिभाषा

10.2.2 राज्य द्वारा आपदाओं की परिभाषा

10.2.3 मानव विज्ञानियों द्वारा आपदाओं की परिभाषा

10.3 मानवविज्ञान एवं आपदा प्रबंधन

10.3.1 समुदाय आधारित आपदा की तैयारियां

10.3.2 सूचना, शिक्षा एवं संचार

10.3.3 स्वदेशी ज्ञान

10.3.4 शहरी संदर्भ में आपदाओं का प्रबंधन

10.4 आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में मानवशास्त्रियों के लिए अवसर

10.5 सारांश

10.6 संदर्भ

10.7 आपकी प्रगति की जाँच के लिए उत्तर


## अधिगम के परिणाम

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी सक्षम होंगेः

- इस बात को परिभाषित करने में कि मानवशास्त्रीय ज्ञान किस प्रकार आपदा प्रबंधन के लिए महत्त्वपूर्ण है;
- इस बात की व्याख्या करने में कि मानव विज्ञानी किस प्रकार आपदाओं को परिभाषित करते हैं तथा उसकी तुलना इस बात से करने में कि अन्य हितधारक इसे कैसे परिभाषित करते हैं;
- आपदा अध्ययनों में मानव विज्ञान के प्रयोग की पहचान करने में; तथा
- इस बात को मान्यता प्रदान करने में कि कैसे मानवशास्त्री आपदाओं का प्रबंधन करने में सहायक हो सकते हैं।

## 10.0 परिचय

यदि आपको अवसर मिले, इस विषय के अध्ययन के पश्चात किसी अध्याय को अपने साथ घर वापस ले जाकर अपने परिवारजन एवं मित्रों के सामने शेख़ी बघारने का, तो वह होगा–'मानव विज्ञान विकल्पों का एक विषय है'। यह विकल्प समाज के संयोजन के तरीके, संसार को जानने के तरीके, शक्ति को साझा करने, नियंत्रण करने के


* डॉ प्रशांत खत्री, मानवविज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उ.प्र.।

तरीके, तथा घटनाओं एवं प्रक्रियाओं के बारे में सोचने के तरीके हो सकते हैं। इस विषय की उत्पत्ति के समय से ही, मानव विज्ञानी 'अन्य' के बारे में चिंतित थे। यह 'अन्य' उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में यूरोपीय विजेताओं के विभिन्न उपनिवेश थे। मानव विज्ञानी या तो समाज की उत्पत्ति एवं क्रमिक उन्नति के बारे में समझ बनाने और लिखने में व्यस्त थे अथवा उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य के दौरान उन तरीकों को दस्तावेजीकृत करने में व्यस्त थे जिनमें समाज अपने आप को संयोजित करते थे। मानव वैज्ञानिक अध्ययनों ने इस विश्वास को जन्म दिया कि लोगों के सोचने का अथवा अपने जीवन को संयोजित करने का कोई एकल अथवा सार्वभौमिक तरीका नहीं है। इस अध्याय को ध्यान से पढ़ना और सीखना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है चूंकि यह हमें एकल तरीके से सोचने से बचाता है। यह हमें विभिन्न वैकल्पिक तरीकों एवं काम करने की विधियों तथा उस संसार एवं ब्रह्मांड जिसमें हम रहते हैं, के बारे में सोचने को सम्मिलित करने में सहायता प्रदान करता है। यह हमें विविधता को मान्यता देना सिखाता है। समाज एक विविधतापूर्ण मद है जिसमें विभिन्न समूह अपनी अपनी रूचियों एवं महत्त्वाकांक्षाओं के साथ रहते हैं। यह अन्य के साथ साथ इस ज्ञान का प्रयोग ही है जिसे नीति निर्माण एवं मानव विज्ञान के व्यावहारिक क्षेत्रों में सर्वाधिक मान्यता मिली है। आपदा ऐसा ही एक क्षेत्र है। जब आपदाएँ आती हैं, उदाहरण के लिए कोई बाढ़ अथवा कोई तूफान अथवा कोई गैस त्रासदी, तब विभिन्न समूह अपनी भेद्यता के आधार पर विभिन्न रूप से प्रभावित होते हैं। यह भेद्यताएं समाज की संरचना में वर्ग, जाति, लिंग, वंश इत्यादि के रूप में पहले से ही व्याप्त होती हैं। मात्र यही नहीं, अपितु लोगों द्वारा घटनाओं को अर्थ दिये जाने में भी विविधता होती है। किसी आपदा के कारण को तकनीकी अर्थ भी प्रदान किए जा सकते हैं अथवा घटना को और अधिक धार्मिक अर्थ भी प्रदान किए जा सकते हैं। ऐसे करने से विभिन्न संस्थाएं एवं समुदाय स्वयं से विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रिया देती हैं। किसी आपदा के समय प्रशासन से लोगों की एवं प्रशासन की लोगों से अपेक्षाओं में भी विविधता पायी जाती है। यह असंतुलन सरकारी प्रतिक्रियाओं के प्रति संतोष के निम्न स्तरों को जन्म देता है तथा आपदाओं से प्रभावित लोगों में चिंता एवं अवसाद के बढ़ने के मुद्दों को जन्म दे सकता है।

### अपनी प्रगति जांचें

1) कोई आपदा किस प्रकार से विभिन्न लोगों को विभिन्न रूप से प्रभावित करती है?

.....

.....

.....

.....

.....

आपदा प्रबंधन कोई ऐसी प्रक्रिया नहीं है जो केवल किसी घटना के हो जाने के बाद ही शुरू हो, अपितु इसमें किसी आबादी पर किसी घटना के हमले से पहले की तैयारियों का चरण भी शामिल होता है। इस चरण में, आपदा प्रबंधन भेद्यताओं में कमी लाने से संबन्धित होती है। एक संकल्पना के रूप में भेद्यता को उन अंतर्व्याप्त संरचनात्मक मुद्दों के रूप में समझा जा सकता है कुछ समूहों अथवा लोगों को किसी आपदा के प्रभावों के प्रति अधिक प्रवृत्त होने के लिए प्रस्तुत करते हैं। मानव वैज्ञानिक

अध्ययनों को इन भेद्य समूहों तथा वह मुद्दे जो इन समूहों को भेद्य बनाते हैं, का मानचित्रण करने के लिए उपयोग किया जा सकता है। लिंग, जाति, वर्ग, वंश, जातीयता जैसे मुद्दे तब महत्त्वपूर्ण बन जाते हैं जब आपदाओं से पड़ने वाले प्रभावों की बात आती है। यह भी देखा गया है कि राहत वितरण चरण के दौरान, सामाजिक वर्ग एक प्रमुख कारक की भूमिका में इस बात के लिए उभर कर आते हैं कि किसे राहत सामाग्री मिलेगी और किसे नहीं। हालांकि, राहत समानता के आधार पर मिलनी चाहिए परंतु आपदाओं की घटनाएँ असमानताओं की प्रतिकृति की घटना बन जाती हैं। असमानताओं एवं टूटन जो लोगों के नित्य प्रतिदिन की परस्परता का भाग होते हैं, वह आपदाओं के दौरान एक महत्त्वपूर्ण तरीके से सामने प्रस्तुत होते हैं।

मानव वैज्ञानिक ज्ञान जिसका उपयोग आपदा प्रबंधन में किया जा सकता है वास्तव में दो स्रोतों से आता है– अ) 'सामान्य' समय में संचालित किए गए मानव वैज्ञानिक अध्ययनों से तथा वह स्थान जो अध्ययन के मानव वैज्ञानिक 'विषय' के प्रथानुकूल भाग थे तथा ब) उन स्थानों पर संचालित किए गए मानव वैज्ञानिक अध्ययनों से जो आपदाओं से प्रभावित थे तथा हैं। दोनों प्रकार के अध्ययन उस ज्ञान को जन्म देते हैं जिसका प्रयोग आपदा प्रबंधन के लिए किया जा सकता है। हालांकि, आपदा अध्ययनों के क्षेत्र में कार्यरत मानवविज्ञानियों का मत है कि मात्र मानवशास्त्रीय ज्ञान को 'प्रयोग' करके आपदाओं का प्रबंधन नहीं किया जा सकता है। मानव वैज्ञानिक ज्ञान की प्रकृति में समाज में व्याप्त शक्ति सम्बन्धों का रहस्योद्घाटन शामिल हो सकता है। यह संकटकाल में सरकार द्वारा कार्रवाई करने तथा नहीं करने को भी उद्घाटित कर सकता है। इसके साथ ही मानव वैज्ञानिक अध्ययन राजनैतिक झुकाव से रहित नहीं होते हैं। उत्तर–औपनिवेशिक संदर्भ में मानव वैज्ञानिक अध्ययनों ने मातहतों के अधिकारों के लिए निरपवाद रूप से वकालत की है। दूसरे शब्दों में, विकाशन एवं आपदाओं द्वारा पीड़ित लोग मानव वैज्ञानिक ज्ञानोत्पत्ति के केंद्र बिन्दु होते हैं तथा मानव विज्ञानी त्रासदियों द्वारा सर्वाधिक प्रभावित लोगों के दृष्टिकोण से वास्तविकता को समझने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार की समझ मानवविज्ञानियों को मात्र एक प्रयोगोन्मुख समस्या का समाधान देने वाले की भूमिका से एक कदम आगे ले जाकर ऐसी भूमिका में ले जाती है जहां वह स्वयं लोगों के अधिकारों की वकालत के लिए सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। वास्तव में लोगों के अधिकारों के लिए काम करने एवं वकालत करने का यह आयाम मात्र संकट से बाहर निकालने के सुझाव देने से अधिक महत्त्वपूर्ण बन जाता है। इस अर्थ में आपदा प्रबंधन एक अत्यंत राजनैतिक गतिविधि बन जाती है। विभिन्न प्रकार के हितधारक होते हैं जो संकटकाल के दौरान संलिप्त होते हैं। सरकारी तथा गैर–सरकारी, दोनों कारक यह दावा करते हैं कि उन्होने समुदाय की सहायता की परंतु लोग फिर भी उस सब से असंतुष्ट रह जाते हैं जो उन्हे मिलता है। तब लोगों के परिप्रेक्ष्य के बारे में लिखना विभिन्न हितधारकों द्वारा अत्यधिक विवादास्पद बना दिया जाता है। यह आपदाओं के क्षेत्र को एक अद्वितीय पहचान देता है।

### अपनी प्रगति जांचें

2) आपदा प्रबंधन के संदर्भ में भेद्यता पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

3) मानव वैज्ञानिक ज्ञान को आपदा प्रबंधन में किस प्रकार प्रयोग किया जा सकता है?

.....

.....

.....

.....

.....

## 10.1 आपदा अध्ययनों में मानवविज्ञान का प्रयोग

एक विषय के रूप में मानव विज्ञान हमें 'संस्कृति' के बारे में सिखाता है। सीधे शब्दों में कहें तो संस्कृतियों को उन मूल्यों के रूप में समझा जा सकता है जिन्हे किसी विशेष स्थान अथवा समय में लोगों द्वारा पोषित एवं संयोजित किया जाता है। इससे यह पता चलता है कि संस्कृतियाँ स्थान एवं समय के आधार पर विशिष्ट होती हैं तथा परिवर्तन की प्रवृत्ति रखती हैं। आपदाएँ ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर देती हैं, जब इन लंबे समय से पोषित एवं संयोजित मूल्यों पर प्रश्न उठाए जाते हैं। किसी आपदा के समय में जिस सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक मूल्य को चुनौती दी जाती है, वह है मानव सुरक्षा। मानवीय सामाजिक, शारीरिक, आर्थिक एवं राजनैतिक सुरक्षा की सम्पूर्ण अवधारणा पर आपदाओं के समय आक्रमण होता है। राज्य, जिसे मानवीय शारीरिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक सुरक्षा प्रदाता समझा जाता है, वही स्वयं भेद्य बन जाता है। आपदा, वह समय होता है जब राज्य रूपी उपकरण में अनेक सांगठनात्मक परिवर्तन हो सकते हैं चूंकि लोग राज्य से उस चीज़ की मांग कर सकते हैं, जो उन्हें लगता है कि सर्वाधिक प्रभावित हुई है–वह है, सुरक्षा की भावना। इसके अतिरिक्त आपदाओं के समय लोगों को अपनी उन सर्वाधिक पोषित गतिविधियों में निलंबन का अनुभव हो सकता है जो उनके दैनंदिन जीवन का भाग होती हैं जैसे मंदिर, मस्जिद अथवा गिरिजाघर जैसे पूजास्थलों पर जाकर पूजा करना। इसी प्रकार, मानव संबंध, जो कि मानव वैज्ञानिक शोध का एक अन्य निरंतर एवं प्रमुख विषय रहा है, उसमें भी परिवर्तन आ सकते हैं। आपदाओं में लोगों में मतभेद एवं फूट उत्पन्न करने की क्षमता होती है। यह मतभेद बड़े पैमाने पर मानवीय सामाजिक एवं आर्थिक संबंधो के संजालीय स्तर पर उत्पन्न हो सकता है अथवा वह परिवार एवं रिश्तेदारी संजालों के घरेलू स्तर पर उत्पन्न हो सकते हैं (टोर्री, 1979)।

प्रतीकवाद और उन अर्थों को समझना जो समाज विभिन्न प्रतीकों को देता है, मानवविज्ञान में एक और प्रमुख विषय है। आपदाएँ नवीन प्रतीकों का सृजन करने तथा पुरानों को ध्वस्त करने के पर्याप्त अवसर देती हैं। विशेषकर भूकंप तथा तूफान जैसी आपदाएँ जो किसी स्थान की वास्तु–कला एवं भू–दृश्य बदलकर रख देती हैं, और विभिन्न राजनैतिक मतों को प्रतिबिम्बित होने के लिए पर्याप्त स्थान देती हैं (नवीन वास्तु–कला में, जिन्हें पुनः निर्मित किया गया है)। आपदा कालीन पुनर्निर्माण के नाम पर नवीन प्रतिरूपों एवं प्रतीकों का सृजन हो सकता है। इसी प्रकार महामारियाँ एवं विश्वमारियां नवीन प्रतीकों एवं रूपकों का सृजन होने के अवसर प्रदान कर सकती हैं। उदाहरण के लिए, महामारियों एवं विश्वमारियों को युद्ध काल के रूप में देखा जाता है। किसी युद्ध के रूपक का उपयोग उस परिस्थिति को समझने के लिए किया जाता

है। ऐसा करना उस घटना के लिए तात्कालिकता एवं महत्त्व की भावना प्रदान करता है परंतु इसके साथ ही राज्य के द्वारा नागरिकों पर विभिन्न प्रकार के प्रतिबंध लगाने के लिए भी उपयोग किया जा सकता है। राज्य युद्धों के समय में किसी निगरानी करने वाले राज्य के रूप में परिवर्तित हो सकता है तथा ऐसा करने से बड़े पैमाने पर नागरिकों की स्वतन्त्रता के साथ समझौता होता है (सिम्पसन, 2014)।

मानव विज्ञानी, मानव व्यवहार को समझने में भी रूचि रखते हैं। व्यवहार एक ऐसी चीज़ है जिसमें आपदाओं के समय में बड़े पैमाने पर बदलाव आ सकता है। आपदाएँ लोगों पर विभिन्न प्रकार की मांगों को थोपती हैं तथा लोगों को निरंतर बदलती हुई स्थितियों के अनुसार अपने आपको उनके अनुकूल करने की आवश्यकता होती है। ऐसा होना व्यवहार में परिवर्तन होने का दबाव बनाता है। व्यवहार का अध्ययन किसी आपदा के दौरान एवं आपदा के बाद किया जा सकता है। इसके साथ ही, पुरातात्त्विक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, जो मानव वैज्ञानिक समझ का एक महत्त्वपूर्ण भाग है, हमें भूतकालीन आपदा संबंधी घटनाओं के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं। यह हमें उन घटनाओं के कारण हुई क्षति के विस्तार तथा किस प्रकार समाजों ने एक साथ मिलकर उस परिस्थिति को संभाला, के बारे में भी बताते हैं (ओलिवर–स्मिथ एवं होफ़मैन, 1999)।

आपदा प्रबंधन के लिए आपदा के क्षेत्र तथा उन विभिन्न कारकों के बारे गहनतापूर्वक समझ बनाने की आवश्यकता है जो उस समय महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जब लोग आपदा की घटनाओं को झेल रहे होते हैं। चूंकि सामाजिक जीवन मानवीय सम्बन्धों तथा उन बदलती परिस्थितियों का एक जटिल संजाल है जो एक दूसरे के साथ तथा स्वयं आपदा की घटना के साथ परस्परता रखते हुए, अध्ययन का एक बहु–आयामी क्षेत्र उपलब्ध करवाती हैं, इसलिए वह एक ऐसे दृष्टिकोण का आह्वान करती हैं, जो समग्र हो। आपदाएँ संकटकाल के दौरान गरीबी के खतरों को समझने का भी अवसर प्रदान करती हैं। वर्ग एक महत्त्वपूर्ण कारक बन जाता है जो किसी आपदा की घटना के बढ़ने तथा घटने के विभिन्न चरणों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसी प्रकार, निरक्षरता, भुखमरी, कुरूपता, टकराव, नरसंहार, जलवायु परिवर्तन, गुलामी, शोषण, प्रवास एवं लोगों का अपने रहने के मूल स्थान से विस्थापन, कुछ ऐसे विषय–वस्तु हैं जिनका आपदा के संदर्भ में अन्वेषण किया जाना चाहिए (होफ़मैन, 2013)।

आपदाएँ मात्र लोगों के जीवन और संपत्ति को खोने का ही कारण नहीं बनती हैं अपितु समाज में पहले से व्याप्त विभिन्न प्रकार के अलगाव अथवा त्रुटियों को सामने लेकर आती हैं। लोग मात्र नुकसान ही नहीं झेलते बल्कि वह उपेक्षा, विस्थापन, रूढ़िबद्धता एवं एकांतता को भी झेलते हैं। यदि हम उदाहरण के लिए, महामारियों को आपदाओं के रूप में देखें तो हमें इस बात की अनुभूति होगी कि वह महामारियाँ जो मानव के आपस में संपर्क में आने से फैलती हैं जैसे वाइरल एवं बैक्टीरियल बीमारियाँ, न केवल जीवन के नुकसान का कारण बनती हैं बल्कि वह कुछ लोगों को अशुद्ध एवं अछूत होने की पहचान भी दे देती हैं। समाज में लंबे समय से चलती आ रही रूढ़िवादिताएं किसी संक्रामक बीमारी के संदर्भ में सामने आ सकती हैं तथा लोग मात्र इसलिए ही नहीं झेलेंगे कि वह किसी विशेष वाइरस अथवा बैक्टीरिया के वाहक हैं बल्कि वह इसलिए भी झेलेंगे क्योंकि वह एक विशेष सामाजिक समूह से संबंध रखते हैं जिसे 'अशुद्ध' माना गया है (ट्रोस्टले, 2005)। इसी प्रकार, किसी विशेष समुदाय अथवा किसी धार्मिक समूह के लोगों को भी सताया जा सकता है तथा उन्हे किसी

भूकंप के बाद पुनर्वास योजना के अंतर्गत समाज के प्रमुख वर्ग से दूर अलग–थलग कॉलोनियों में रहने पर विवश किया जा सकता है। कभी कभी भूकंप जैसी आपदाएँ समाज के प्रमुख वर्ग को आपदाओं से उबरने एवं पुनर्वास चरण के ढांचे को पुनर्निर्माण करने का अवसर प्रदान करती हैं (सिम्पसन, 2014)। इस बात को भी दस्तावेजीकृत किया गया है कि आपदा के बाद का पुनर्वास एवं पुनःस्थापन चरण समाज के भीतर ही संघर्ष उत्पन्न कर देता है चूंकि यह वह चरण भी होता है जिसमें विभिन्न सरकारी एवं गैर–सरकारी संगठनों द्वारा राहत दी जा रही होती है। लोगों को ऐसा लग सकता है कि उन्हे जानबूझकर राहत योजना से बाहर रखा गया है। वह पड़ोसी जो सामान्य दिनों में अच्छे मित्र हुआ करते थे, दूसरों को संदेह की दृष्टि से देखना आरंभ कर सकते हैं कि कहीं उन्हें विभिन्न राहत संस्थाओं द्वारा कोई अनुचित लाभ तो नहीं दिया जा रहा है। आपदा प्रबंधन की मानव वैज्ञानिक समझ में यह सभी मुद्दे शामिल हो सकते हैं ताकि आपदा चक्र के विभिन्न चरणों का नियोजित किया जा सके।

आपदाएँ ऐसी परिस्थितियाँ भी उत्पन्न कर देती हैं जहां 'बाहर' के लोग भी आपदा प्रभावित स्थान पर आ सकते हैं तथा आकस्मिक अवसरों का लाभ उठा सकते हैं। इस प्रकार की परिस्थितियाँ पहले घटित हो चुकी हैं तथा मानव विज्ञानियों द्वारा उनको दस्तावेजीकृत किया जा चुका है। वास्तव में भूकंप जैसी आपदाएँ शून्य से चीजों के पुनर्निर्माण की संभावनाओं को जन्म देती हैं। अनेक चीजों को पुनःनिर्मित किए जाने की आवश्यकता होती है, जिन्हें क्षति पहुंची होती है जैसे घर, सार्वजनिक एवं निजी इमारतें, तथा सार्वजनिक स्थल। यह नए व्यवसायों एवं उद्योगों के बनने एवं स्थापित होने के अवसर भी देती हैं ताकि नए रोजगार उत्पन्न किए जा सकें। इस प्रकार की परिस्थिति को नाओमि क्लें द्वारा 'आपदा पूंजीवाद' का नाम दिया गया है। ऐसा दस्तावेजीकृत किया गया है कि 2001 में गुजरात में आए भूकंप में, जिसमें अधिकतम क्षति पश्चिम गुजरात अर्थात कच्छ क्षेत्र में हुई थी, वहाँ पर बाहरी लोगों ने अर्थात पूर्वी गुजरात – जहां के लोग पश्चिमी भाग की तुलना में अधिक समृद्ध हैं– वह पश्चिमी भाग में आए तथा उन्होने पुनर्निर्माण एवं पुनर्वास से जुड़े अधिकतर अवसरों को लपक लिया। ऐसा होने से पश्चिम गुजरात के लोगों के पास बहुत कम ही अवसर बचें।

आपदाएँ वो समय होती हैं जिसमें घरेलू हिंसा का स्तर भी बढ़ता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि आपदा काल बहुत ही तनावपूर्ण समय होता है तथा आपदा की उभरती हुई परिस्थितियाँ लोगों पर अनेक मांगों का बोझ डालती हैं, जिनके प्रति उन्हे अपने आप को ढालना होता है। घरेलू हिंसा अधिकांश रूप से घरेलू स्तर पर काम के बँटवारे से जुड़ी होती है। कम होते आर्थिक संसाधन एवं आजीविका के अवसर भी जीवन को अनिश्चित एवं भविष्य को अप्रत्याशित बना देते हैं। यह लोगों द्वारा शहरी इलाकों की ओर रोज़गार की खोज में प्रवास करने का कारण बनता है। वहाँ पर उन्हे विवश होकर प्रतिकूल परिस्थितियों में काम करना पड़ता है। विभिन्न रोजगारों से जुड़े सम्मान एवं उपयुक्तता के मुद्दे भी आपदा–प्रेरित बाह्य–प्रवास के कारण उभर कर सामने आते हैं। लोग उन रोजगारों को करने के लिए विवश होते हैं जिन्हे वह सामान्य परिस्थितियों में कभी नहीं करते। इसलिए आपदाएँ जीवन को जीने तथा तत्काल प्रभाव से निकटतम पर्यावरण एवं लोगों के साथ जुडने के सम्पूर्ण रूप से नवीन तरीकों का आह्वान करती हैं।

आपदाएँ अपने साथ भारी मात्रा में धन भी लेकर आती हैं, चूंकि विभिन्न सरकारी, गैर–सरकारी एवं अंतर्राष्ट्रीय संगठन लोगों के बचाव के लिए आगे आते हैं तथा उनके

समक्ष मौद्रिक पैकेज़ प्रस्तुत करते हैं ताकि लोग अपनी दवाइयों, कपड़ों, भोजन तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं का प्रबंध कर सकें। इतने बड़े स्तर पर धन की संलिप्तता के साथ ऐसा देखा गया है कि आपदा ऐसा समय होता है जिस दौरान भ्रष्टाचार भी होता है। राजनीति में एक दूसरे पर कीचड़ उछलना, अर्थव्यवस्था को मंदी से उबारने के नाम पर नव–उदारवादी आर्थिक एजेंडा को आगे बढ़ाना, सत्ता के लिए संघर्ष, विभिन्न समूहों के बीच प्रतिवाद, यौन शोषण एवं अत्याचार तथा जिस तरह से विश्व स्तर पर सूचना का प्रसारण किया जाता है, उसमें मीडिया का प्रभाव लगातार बढ़ना, यह सब मिलकर कुछ प्रमुख एवं महत्त्वपूर्ण विषयों को सामने लाते हैं जिनके बारे में आपदाओं के दौरान समझ बनाने तथा उनका अध्ययन करने की आवश्यकता है।

**अपनी प्रगति जांचें**

4) प्रतीकवाद एवं मानव व्यवहार आपदाओं के साथ किस प्रकार संबन्धित है?

.....

.....

.....

.....

.....

## 10.2 श्रेष्ठतर प्रबंधन हेतु आपदाओं को परिभाषित करना

यह देखना दिलचस्प होगा कि मानव विज्ञानियों ने किस प्रकार आपदा शब्द को परिभाषित किया है। आपदा जैसे शब्द को परिभाषित करने एवं समझने के लिए मानव वैज्ञानिक ज्ञान का प्रयोग इसका दूसरा पहलू है। परिभाषाएँ किसी कार्रवाई के होने तथा आपदाओं से निपटने एवं उनका प्रबंधन करने के लिए उसका मार्ग निर्धारण भी करती हैं। हालांकि, मानव विज्ञानी विद्वानों का ही एकमात्र समूह नहीं है जिसने इस शब्द को परिभाषित करने का प्रयास किया है। लोग इस शब्द तथा इससे जुड़ी क्षतियों को परिभाषित करने का प्रयास तब से करते आ रहे हैं, जब से वह इस प्रकार की घटनाओं का अनुभव कर रहे हैं। इस शब्द की सर्वाधिक समान्यतः आयोजित परिभाषा अथवा समझ इसके अलौकिक रूप से घटित होने में अवस्थित है। ऐसे बड़े व्यापक स्तर पर माना जाता है कि आपदाएँ तब आती हैं जब भगवान अति क्रुद्ध होते हैं। आपदा की घटनाओं के होने को *कर्म* के सिद्धान्त के साथ भी जोड़ा जाता है, जिसमें प्रलयंकर घटनाओं को मानवों के पापों की सज़ा के रूप में देखा जाता है। 'डिज़ास्टर' (आपदा) शब्द की उत्पत्ति फ्रेंच शब्द 'डेसास्ट्रे' से हुई है, जिसका अर्थ है 'बुरे तारे'। इस शब्द की उत्पत्ति में ही एक अलौकिकता का बोध है। यह इस ओर भी इंगित करता है कि इस प्रकार की घटनाएँ मानव के नियंत्रण से बाहर हैं तथा किसी दिव्य हस्तक्षेप द्वारा ही नियंत्रित की जा सकती हैं। विज्ञान में प्रगति होने तथा भूकंपों, तूफानों एवं बाढ़ के आने के कारणों को जानने के बावजूद भी लोग किसी आपदा की घटना द्वारा जब बड़े पैमाने पर जीवन को क्षति पहुँचती है तो दिव्य हस्तक्षेप में आस्था रखते हैं। यदि मानव विज्ञान लोगों का वैश्विक दृष्टिकोण जानने में रूचि रखता है, तो यह बहुत अच्छी तरह से मानव विज्ञान के दायरे में आता है, कि मानवविज्ञानी आपदाओं के बारे क्या सोचते हैं साथ ही यह भी समझना कि लोग इन घटनाओं के बारे में क्या सोचते हैं, जो इतने बड़े पैमाने पर कष्ट और पीड़ा का कारण बनती हैं।

यहाँ पर फिर से उन वैकल्पिक तरीकों को समझने की केन्द्रीय मानव वैज्ञानिक स्थिति बनती है, जिनमें लोग एवं विद्वत्जन 'वास्तविकता' को परिभाषित करते हैं।

**अपनी प्रगति जांचें**

5) वह कौन सा फ्रेंच शब्द है जिससे 'डिज़ास्टर' (आपदा) शब्द की उत्पत्ति हुई? इसका क्या अर्थ है तथा यह आपदा के प्रति अलौकिक धारणाओं के साथ किस प्रकार से जुड़ा हुआ है?

.....

.....

.....

.....

.....

## 10.2.1 लोगों द्वारा आपदाओं की परिभाषा

अपने स्वयं के लिए परिभाषित करने के अलावा, मानव विज्ञानी यह जानने में रूचि रखते हैं कि लोग इन घटनाओं को किस प्रकार परिभाषित करते हैं। 'जन–केन्द्रित' परिभाषाएँ जो वास्तव में लोगों के द्वारा भोगी गयी पीड़ा के अनुभवों पर आधारित होती हैं, वह दार्शनिक प्रकृति की होती हैं। लोगों की प्रवृत्ति उन परिस्थितियों के बारे में तर्क–वितर्क एवं प्रश्न करने की होती है, जिनसे वह प्रभावित होते हैं। वह धार्मिक दर्शन जो आपदाओं के कारण होने वाली पीड़ा को समझने की ओर उन्मुख होते हैं, वास्तव में "वह पीड़ा से बचने के लिए नहीं बल्कि पीड़ा कैसे सही जाए, शारीरिक कष्ट, व्यक्तिगत क्षति, शारीरिक पराजय को कैसे सहन करने योग्य बनाया जाए से संबन्धित होते हैं (दास, 1995 पेज–138)"। इस प्रश्न के बारे में विभिन्न धार्मिक दर्शनों में विभिन्न तरीकों से निपटने की बात की गयी है। अनु कपूर (2010) हिन्दुत्त्व के संदर्भ में इस मुद्दे पर कहती हैं कि यह कर्म की धारणा ही है जिसका उपयोग किसी पीड़ा के कारण को परिभाषित करने एवं समझने के लिए किया जाता है। वह लिखती हैं कि "कर्म एक शोषक है जो न केवल एक प्रेरक है बल्कि यह पीड़ा एवं कष्ट को सोंख लेता है (कपूर, 2010;पेज –96)"। इसके अतिरिक्त वह किसी विषय के बारे में समझ बनाने के एक लोक आधारित प्रतिमान की बात करती हैं जो 'अवशोषण' पर आधारित नहीं है बल्कि 'प्रार्थना' पर आधारित है। इसके द्वारा उनका अर्थ है कि लोक प्रतिमान उन विभिन्न स्थानीय देवी–देवताओं से प्रार्थना पर आधारित हैं, जो लोगों पर मुसीबत लाने के लिए जिम्मेदार माने जाते हैं।

बाढ़ जैसी आपदाओं पर किए गए नृजातीय अध्ययनों ने यह उद्घाटित किया है कि किसी घटना के बारे में जन–केन्द्रित परिभाषा एवं समझ उन्हीं घटनाओं के बारे में सत्तावादी अथवा प्रशासनिक परिभाषाओं से अत्यंत भिन्न होती हैं। इस प्रकार के एक अध्ययन में इस बात की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है कि लोग बाढ़ जैसी आपदाओं को 'परेशानी' अथवा समस्या के रूप में देखते हैं। वह उन कठिनाईयों के बारे में बहुत सारी बातें करते हैं जिनका सामना उन्हें तथा उनके समुदाय को बाढ़ के दौरान करना पड़ा था। इसके ठीक विपरीत स्थानीय प्रशासन बाढ़ को एक प्रकृतिक घटना के रूप में देखता है, जिससे पूर्व–निर्धारित प्रोटोकॉल का अनुसरण करते हुए निपटा जाना चाहिए। यह मानदंडों के दो विभिन्न समुच्चय बनने का कारण बनता है–

अ) प्रशासनिक अथवा सत्तावादी मानदंड तथा ब) अप्रत्याशित अथवा क्षेत्रीय मानदंड। इस बात पर तर्क–वितर्क होता है कि अलग–अलग मानदंडों के कारण आपदा प्रबंधन प्रयास उन लोगों की अपेक्षाओं को पूरा नहीं कर पाते जो वास्तव में समस्याओं से जूझ रहे होते हैं। यह प्रशासनिक व्यवस्थाओं के प्रति तनाव एवं निराशा का कारण बनती हैं तथा किसी परिस्थिति को एक राज्य उपकरण एवं लोगों के बीच हिंसक संघर्ष में परिवर्तित करने की क्षमता रखती हैं। यही कारण है कि कौन आपदा को किस प्रकार परिभाषित करता है, आपदाओं के प्रबंधन के लिए एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण कदम होता है (खत्री, 2011)।

### अपनी प्रगति जांचें

6) आपदा के बारे में जन–केन्द्रित परिभाषा एवं समझ से क्या अभिप्राय है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

## 10.2.2 राज्य द्वारा आपदाओं की परिभाषा

यह देखने से पहले कि मानव विज्ञानी इस शब्द को किस प्रकार परिभाषित करते हैं, यह देखना अच्छा रहेगा कि राज्य इसे कैसे परिभाषित करता है। यह हमें मानव वैज्ञानिक परिभाषा एवं समझ के बारे में पता लगाने के लिए एक महत्त्वपूर्ण तुलनात्मक ढांचा प्रदान करेगा। राज्य द्वारा दी गयी आपदा की परिभाषा आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005 में मिलती है। इस अधिनियम के अनुसार आपदाओं को – "प्रकृतिक अथवा मानवकृत कारणों से अथवा दुर्घटना अथवा लापरवाही से उत्पन्न ऐसी कोई महाविपत्ति, अनिष्ट, विपत्ति अथवा घोर घटना अभिप्रेत जिसका परिणाम जीवन की हानि अथवा मानवीय पीड़ाएँ अथवा संपत्ति का नुकसान और विनाश अथवा पर्यावरण का नुकसान अथवा अवक्रमण है तथा ऐसी प्रकृति अथवा परिमाण का है, जो प्रभावित क्षेत्र के समुदाय की सामना करने की क्षमता से परे है"। यहाँ पर दो महत्त्वपूर्ण मुद्दे हैं जिनपर इस परिभाषा में प्रकाश डालने की आवश्यकता है:

1) एक आपदा के चार कारण बताए गए हैं– प्राकृतिक, मानव निर्मित, दुर्घटना और लापरवाही जिससे पर्याप्त नुकसान होता है जिसमें जीवन और संपत्ति की हानि के अलावा, पर्यावरण का क्षरण और

2) आपदाओं का परिमाण समुदाय की सामना करने की क्षमता से परे होता है। इसका अर्थ है कि समुदाय को उस परिस्थिति से निपटने के लिए बाहरी सहायता एवं सहयोग की आवश्यकता होती है।

**अपनी प्रगति जांचें**

7) किसी आपदा के कौन से चार कारण होते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

## 10.2.3 मानव विज्ञानियों द्वारा आपदाओं की परिभाषा

आपदाओं की उपरोक्त घटना–उन्मुख परिभाषा के विपरीत, आपदाओं की मानव वैज्ञानिक समझ की प्रकृति प्रक्रियात्मक होती है। इसका अर्थ है आपदाएँ समय एवं स्थान में अलग–अलग घटनाएँ नहीं हैं अपितु वह समाज के सामाजिक–सांस्कृतिक एवं संरचनात्मक ढांचे में बैठी हुई हैं। इसे समझने के लिए मानव विज्ञानियों ने खतरे एवं आपदाओं के बीच भेद स्पष्ट किया है। जहां खतरे को उन भौतिक घटनाओं के रूप में देखा जाता है, जिनमें लोगों एवं परिवेश को नुकसान पहुँचने की क्षमता होती है, वहीं आपदाएँ तभी कहलाती हैं जब लोगों के भेद्य समूह खतरे से प्रभावित होते हैं। यह इस ओर इंगित करता है कि खतरे स्वयं आपदाओं का कारण नहीं बनते। जब खतरे कमजोर लोगों के साथ परस्पर संपर्क में आते हैं, तो आपदाएं होती हैं।

आपदाओं के प्रति यह प्रक्रियात्मक दृष्टिकोण जिसकी ऊपर व्याख्या की गयी है यह देखने में अधिक रूचि रखता है कि धरातल पर क्या होता है, बजाय आपदाओं के कारण पहुंची क्षति से संबन्धित बड़े आंकड़ों पर केन्द्रित होने के। मानव विज्ञान में विशेषकर राजनैतिक मानव विज्ञान में प्रक्रियात्मक दृष्टिकोण ज़मीनी स्तर पर राजनीति के साथ संपृक्त है। वह कम से कम विश्लेषण के रूप में राज्य के बारे में चिंतित होते हैं तथा इस बात पर केन्द्रित रहते हैं कि कैसे लोगों के विभिन्न समूहों के बीच ज़मीनी स्तर पर संघर्ष उत्पन्न होते हैं। इसी प्रकार आपदा अध्ययनों में प्रक्रियात्मक दृष्टिकोण सूक्ष्म–स्तरीय मुद्दों एवं आपदा के उत्पन्न होने में उनकी भूमिका के साथ जुड़ा होता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार यह विश्वास किया जाता है कि कुछ पहले से विद्यमान स्थितियाँ होती हैं जो किसी घटना अथवा खतरे के कारण उत्प्रेरित होती हैं, जो किसी आपदा का कारण बनती हैं। उदाहरण के लिए, 1984 में हुई भोपाल गैस त्रासदी भोपाल, मध्य प्रदेश स्थित यूनियन कारबाइड फैक्ट्री से मात्र मिथाइल आइसोसायनेट (एमआईसी) के रिसाव के कारण ही नहीं हुई थी, अपितु सुरक्षा व्यवस्थाओं की कमी, कंपनी द्वारा की गयी लापरवाही, आपदा प्रबंधन योजना की कमी एवं सर्वोपरि वह जल्दबाज़ी जिसके अंतर्गत उन परिणामों के मूल्यांकन के बिना जो आपदा की घटनाओं की परिस्थिति में देखने को मिल सकते थे, विकास गतिविधियों का क्रियान्वयन करना, जैसे, आधारभूत कारणों से भी हुई (दास, 1995)। इसी प्रकार, प्रकृतिक घटनाएँ जैसे हिमालय क्षेत्र की तलहटी में मौसमी बाढ़ का आना वास्तव में प्रकृतिक नहीं है जैसा कि इस पर भारत में अन्य क्षेत्रीय संदर्भों में तर्क दिया गया है कि औपनिवेशिक एवं पूंजीवादी मनसिकताओं ने उस क्षेत्र के पारिस्थितिक संतुलन को बदल कर रख दिया, जिसने मौसमी बाढ़ को सिंचाई के स्रोत न होकर लोगों के लिए बड़े पैमाने पर परेशानियों का कारण बना दिया (ड्सौजा, 2006)। इसलिए, प्रक्रियात्मक

दृष्टिकोण के माध्यम से आपदाओं को अपने आप होने वाली किसी घटना के बजाय, निर्मित के रूप में देखा जाता है। इसी बात को समझने के लिए एक और उदाहरण है यह कहना कि विश्वभर में जलवायु में परिवर्तन आने से बाढ़ एवं सूखे पड़ने की घटनाएँ बढ़ रही हैं जिनका सीधा संबंध मानव गतिविधियों से है। जलवायु परिवर्तन वर्षा की आवृत्ती एवं परिमाण में परिवर्तन का कारण बना।

इसलिए ऐसा कहा जा सकता है कि आपदाएँ तब घटित होती हैं जब ख़तरे किसी भेद्य आबादी को प्रभावित करते हैं। इसे एक सरल समीकरण की सहायता द्वारा दिखाया जा सकता है– आपदाएँ = खतरा x भेद्यता। आपदाएँ, जैसा कि प्रक्रिया के संबंध में परिभाषित किया गया है, भेद्यता की संकल्पना पर आधारित होती हैं। समुदाय की तथा समुदाय और इसके परिवेश एवं प्रौद्योगिकी पहले से विद्यमान परिस्थितियाँ होती हैं जो आपदाओं के उत्पन्न होने के लिए निर्णायक होती हैं। इस दृष्टिकोण से आपदाओं को मानव, पर्यावरण और प्रौद्योगिकी के बीच परस्पर संबंध या एक इंटरफेस के रूप में समझा जाता है।

## 10.3 मानव विज्ञान एवं आपदा प्रबंधन

'आपदा प्रबंधन' शब्द से हमारा तात्पर्य क्या है? इस शब्द के अर्थ में वास्तव में एक विराम अथवा एक परिवर्तन है, जैसा कि आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005 में उल्लिखित है। इसका अर्थ एक अधिक राहत उन्मुख प्रक्रिया से बदलकर अपनी प्रकृति में और अधिक व्यापक हो गया है, तथा आपदा चक्र के विभिन्न चरणों को अपने में शामिल करता है। यह नवीन दृष्टिकोण अधिक सक्रिय है तथा इसमें क्षमता निर्माण, भेद्यता में कमी लाना, एवं किसी घटना के होने से पहले की तैयारियां शामिल हैं। आपदा प्रबंधन को वास्तव में दो विभिन्न चरणों के संबंध में समझा जा सकता है– क्षमता निर्माण एवं भेद्यता को कम करने का आपदा–पूर्व चरण तथा आपदा के बाद वाला राहत, पुनर्प्राप्ति एवं पुनर्वास का चरण। इस तंत्र को मस्तिष्क में धारण करना अत्यावश्यक है ताकि इसमें व्याप्त मानव विज्ञान की भूमिका को समझा जा सके।

मानव वैज्ञानिक ज्ञान को प्रभावशाली ढंग से आपदाओं के बेहतर प्रबंधन के लिए उपयोग किया जा सकता है। आपदा प्रबंधन में किसी मानव वैज्ञानिक दृष्टिकोण का केन्द्रीय बिन्दु लोगों को किसी प्रबंधन योजना के केंद्र में रखना होता है। तकनीकी समाधानों के बारे में सुझाव देने तथा उन्हें क्रियान्वित करने से अधिक, मानव विज्ञानी लोगों तथा विभिन्न राहत एवं पुनर्वास संस्थाओं के बीच सेतु का काम करते हैं। मानव विज्ञानी लोगों के अधिकारों एवं संस्कृतियों के बीच मध्यस्थता करने की भूमिका भी अपना सकते हैं। जो कोई भी आपदा प्रबंधन के कार्य से किसी भी तरीके से जुड़ा हुआ है, उस प्रत्येक व्यक्ति का लक्ष्य लोगों को केंद्र में रखना होता है, हालांकि मानव वैज्ञानिक साधनों एवं तकनीकों के प्रयोग के बिना इस लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता। सामान्यतः ऐसा देखा गया है कि लोग कभी भी संस्थाओं से प्राप्त राहत एवं पुनर्वास पैकेज से संतुष्ट नहीं होते हैं। इसके पीछे का कारण, राहत संस्थाओं द्वारा ज़मीनी स्तर पर जो किया जाना चाहिए उसके बजाय आपदाओं एवं इसके द्वारा पड़ने वाले प्रभाव से जुड़ी धारणाओं को पोषित करना। यही वह समय है जब मानव वैज्ञानिक ज्ञान का अत्यधिक महत्त्व होता है। विभिन्न क्षेत्र जहां पर मानव विज्ञानी अपना योगदान कर सकते हैं तथा करते रहे हैं, उसमें शामिल हैं– समुदाय आधारित

आपदा के लिए तैयारियां (CBDP), सूचना, शिक्षा एवं संचार (IEC), स्वदेश ज्ञान तथा नीति एवं वकालत।

**अपनी प्रगति जांचें**

8) उन कुछ क्षेत्रों के नाम बताएं जिसमें मानव विज्ञानी आपदा प्रबंधन में योगदान करते रहे हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

## 10.3.1 समुदाय आधारित आपदा की तैयारियां (CBDP)

ऐसा देखा गया है कि यह समुदाय ही होता है जो किसी आपदा के संपर्क में सबसे पहले आता है। यह भी सत्य है कि किसी भी प्रकार की राहत के पहुँचने से पहले, समुदाय के सदस्य ही आपातकाल में सबसे पहले राहत प्रदान करने वाले होते हैं। इसलिए आपदा के प्रति किसी भी तैयारी की योजना में समुदाय की संलिप्तता बहुत आवश्यक है। लोगों की स्थानीय परिस्थितियों तथा आकांक्षाओं को अवश्यंभावी रूप से किसी भी प्रबंधन योजना का भाग बनना चाहिए। सीबीडीपी दृष्टिकोण इस बात को सटीकता के साथ सुनिश्चित करता है। यह लोगों को योजना तैयार करने के चरण में शामिल करता है। यह अनेक सहभागिता विधियों द्वारा किया जाता है जैसे भेद्यता मानचित्रण, संसाधन मानचित्रण तथा सुरक्षित मार्ग मानचित्रण। भेद्यता मानचित्रण समुदाय की सहायता से यह समझने का प्रयास करती है कि किसी विशेष प्रांत में निकटतम अस्पताल से अपनी दूरी तथा आपातकाल में उन तक पहुँच के संदर्भ में वह कौन से क्षेत्र हैं जो भेद्य हैं। इसके अतिरिक्त, महत्त्वपूर्ण स्थान जैसे स्कूल, पूजा स्थल, घर, कुएं, नलके इत्यादि भी स्पष्ट रूप से मानचित्रित होते हैं। वह स्थान जो सबसे पहले एवं सबसे अधिक प्रभावित होते हैं, उदाहरण के लिए– बाढ़ से, उन्हे भी चिन्हित किया जाता है। भेद्यता मानचित्रण के अतिरिक्त, सुरक्षित मार्ग मानचित्रण भी किया जाता है, ताकि यह जाना जा सके कि वह कौन से स्थान एवं मार्ग हैं जिनका उपयोग किसी आपातकालीन परिस्थिति में किया जा सकता है। इसके साथ ही, संसाधन मानचित्रण द्वारा हम उन स्थानों को चिन्हित कर सकते हैं जो संसाधनों के सुरक्षित भंडारण के लिए आपदाओं के दौरान एवं पहले उपयोग किए जा सकते हैं, तथा उन स्थानों को जानने के लिए एवं मानचित्रण करने के लिए जहां आपदा की घटना के दौरान कोई व्यक्ति संसाधनों तक पहुँच सकता है। सीबीडीपी योजना में किसी प्रांत में रहने वाले भेद्य समूहों का भी मानचित्रण किया जा सकता है, जिसमें गर्भवती महिलाएं, बच्चे, बुजुर्ग, लंबे समय से बीमार चल रहे लोग, अल्प अथवा शून्य आय वाले लोग, इत्यादि शामिल हो सकते हैं। मानचित्रण का यह अभ्यास किसी आपदा के आने से पहले ही योजना तैयार करने में सहायता करता है तथा लोगों की क्षमता में सुधार करता है एवं उन्हें किसी भी प्रकार की आपातकालीन घटना के लिए तैयार किया जा सकता है।

सीबीडीपी के अन्य घटक भी हैं जिनमें स्वयंसेवियों के स्थानीय दल बनाना शामिल है, जो किसी आपातकाल में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। सीबीडीपी योजना में किसी विशेष क्षेत्र में आई आपदा के इतिहास तथा पहले आई आपदाओं द्वारा पहुंचाई गयी क्षति का परिमाण एवं विस्तार को समझना, भी शामिल है। यह भविष्य में आने वाली आपदाओं के प्रति बेहतर तैयारी करने में सहायता प्रदान करेगा। अतः, मानव वैज्ञानिक कार्य एवं ज्ञान आपदा प्रबंधन की तैयारी करने वाले चरण के साथ ही प्रारम्भ हो जाता है।

### 10.3.2 सूचना, शिक्षा एवं संचार (आई ई सी मॉडल)

किसी भी आपात स्थिति में सूचना एक बहुत ही महत्वपूर्ण आयाम है। उदाहरण के लिए लोगों को मौजूदा बाढ़, चक्रवात या सुनामी के बारे में सूचित करने की आवश्यकता है। लोग वास्तव में एक उपस्थित आपदा के लिए पहले से योजना बना सकते हैं, यदि उनके पास इसके उद्भव और प्रगति के बारे में उचित जानकारी है। उनके पास आपदाओं के दौरान राहत के लिए विभिन्न संस्थाओं द्वारा की गयी विभिन्न व्यवस्थाओं के बारे में भी पूरी जानकारी होनी चाहिए, उदाहरण के लिए दवाइयों, अस्पतालों, खाद्य पदार्थों इत्यादि की उपलब्धता के बारे में। किसी जानकारी की अनुपालन एवं इसकी विश्वसनीयता के बीच एक महत्त्वपूर्ण संबंध है। कोई स्रोत जितना अधिक विश्वसनीय एवं भरोसेमंद होगा, उतना ही अधिक उसका अनुपालन होगा। इसे उन परिस्थितियों के संदर्भ में देखा जाना चाहिए जहां पर लोगों को तटीय इलाकों से आने वाले तूफान के कारण समय रहते सुरक्षित निकालना होता है। यदि पहले के मौकों पर लोगों द्वारा यह अनुभव किया गया होगा कि तूफान के बारे में सूचना सटीक नहीं थी, तो बहुत संभव है कि वह उस क्षेत्र को खाली करने के संदेश का अनुपालन नहीं करेंगे। लेखक ने पूर्वी उत्तर प्रदेश के बाढ़ प्रभावित जिलों में काम करते हुए यह अनुभव किया कि लोगों ने आने वाली बाढ़ के संबंध में जिला प्रशासन द्वारा जारी की गयी सूचना का अनुपालन करने से इसलिए माना कर दिया क्योंकि इससे पहले के मौकों पर दी गयी सूचना गलत थी। इसके साथ ही अविश्वसनीय एवं मिथ्या जानकारी किसी संकट से गुज़र रहे लोगों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए विनाशकरी सिद्ध हो सकती है। इस इकाई का लेखन उस समय में किया जा रहा है, जब कोविड –19 नाम की एक सर्वव्यापी महामारी फैली हुई है। आपदा प्रबंधन (आ प्र) अधिनियम एवं महामारी अधिनियम के अनेक प्रावधानों को इस वाइरस को फैलने से रोकने के लिए लागू किया गया है। आपदा प्रबंधन अधिनियम के दो अनुच्छेद हैं जो विशेष रूप से आपदाओं से संबन्धित चेतावनी एवं अन्य प्रकार की सूचना के प्रसारण के मुद्दे से जुड़े हैं। गलत चेतावनी प्रसारित करने की परिस्थिति में आपदा प्रबंधन अधिनियम के अध्याय X में अनुच्छेद 54 में दंडों के बारे में बताया गया है। इसी अधिनियम का अनुच्छेद 67 सरकार द्वारा मीडिया तथा अन्य प्रसारण मंचों को चेतावनियों के प्रसारण के विषय में दिशा–निर्देश देने की शक्तियों के बारे में संबधित है।

यह भी प्रलेखित है कि आपदा पूर्व चरण के दौरान सूचना, शिक्षा और संचार भेद्यता में कमी के लिए महत्वपूर्ण है। स्थानीय प्रशासन को शासनादेश होता है कि वह लोगों को इस बात के लिए शिक्षित करे कि कैसे वह अपने आप को किसी आपातकालीन परिस्थिति के लिए तैयार करें। वह ऐसा करने के लिए समुदाय के लिए संदेशों को तैयार करते हैं तथा इन संदेशों को अनेक तरीकों से प्रसारित करते हैं। लेखक ने पूर्वी

उत्तर प्रदेश के बाढ़ प्रभावित प्रान्तों में उपयोग किए गए एक ऐसे ही तरीके को दस्तावेजीकृत किया है जहां प्रशासन ने *आपदा प्रबंधन रथ* (डिज़ास्टर मैनेजमेंट चेरिएट) का उपयोग किया, जिसमें एक चौपहिया वाहन पर लाउडस्पीकर बांध कर गाँवों के अंदर के इलाकों में भेजा जाता है एवं उसमें पहले से ही नामित एक व्यक्ति होता है जिसका काम संदेश को प्रसारित करना है; वह लोगों के साथ लाउडस्पीकर के माध्यम से बात करता है। ऐसा देखा गया कि इस ढंग से संचार अधिक प्रभावशाली नहीं था क्योंकि लोग उसमें रूचि नहीं दिखा रहे थे, चूंकि वह अपने दैनंदिन कार्यों में व्यस्त थे। अनेक कारणों में से एक जिसे लोगों की बेपरवाही के साथ जोड़कर देखा गया था, वह था संचार की प्रक्रिया। इसके द्वारा बेहतर नतीजे प्राप्त किए जा सकते थे यदि इस विधि के बारे में दोनों पक्ष आपस में बात कर लेते (प्रेषक एवं प्राप्तकर्ता), तो लोग इस प्रकार कि विधियों के बारे में अपने पहले के अनुभव साझा कर सकते थे (खत्री, 2011)।

### 10.3.3 स्वदेशी (देशज) ज्ञान

हमने पहले ही इस इकाई के प्रारम्भ में यह देख लिया है कि मानव विज्ञान विकल्पों का विज्ञान है। मानव विज्ञानी इसलिए ज्ञान के वैकल्पिक रूपों में रूचि रखते हैं। सार्वभौमिक वैज्ञानिक क़ानूनों एवं ज्ञान के साथ साथ, परंपरागत बुद्धिमत्ता पर आधारित स्थानीय ज्ञान के विभिन्न अन्य रूप हैं। ज्ञान का यह रूप कहीं पर औपचारिक ढंग से लिखा नहीं गया है परंतु एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक रूप से संचारित होती है। यह परंपरागत बुद्धिमत्ता अपने निकटतम परिवेश के साथ तथा उसमें रहने से संबन्धित होती है। इस प्रकार के ज्ञान में वह विभिन्न तरीके सम्मिलित हो सकते हैं जिनमें लोग पर्यावरण में दिखने वाले लक्षणों द्वारा आनेवाली आपदा के बारे में अनुमान लगाते हैं। इसमें मुक़ाबला करने के वह विभिन्न तंत्र भी शामिल हो सकते हैं जिनका उपयोग लोग आपदा की परिस्थिति से निपटने के लिए करते हैं। हालांकि, लोगों का अभी भी यही विश्वास है कि आपदा के जोखिम को कम करना एक सार्वभौमिक प्राथमिकता है तथा इसके लिए सार्वभौमिक समाधान किए जाने चाहिए। ऐसी मान्यता है कि आपदा के जोखिम को कम करने के मुद्दे को संबोधित करने का कार्य सरकारों तथा विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की ज़िम्मेदारी है। आपदा के प्रभाव की सार्वभौमिक प्रकृति होना हमारे इस विश्वास का कारण बनता है कि किसी एक सार्वभौमिक स्थूल–समाधान की खोज की जानी चाहिए। यह स्वदेशी समुदायों के स्थानीय ज्ञान को पीछे लौटा देता है। यह स्थानीय ज्ञान द्वारा आपदा के जोखिम को कम करने की प्रभावशीलता की भी अनदेखी करता है।

हालांकि अब इस बात का आभास किया जा चुका है कि स्वदेशी ज्ञान को आपदा के जोखिम को कम करने के लिए शामिल करना एक बड़ी सहायता सिद्ध हो सकता है। समुदाय बाढ़ एवं तूफानों जैसी खतरनाक परिस्थितियों की अत्यधिक निकटता में रहते आए हैं तथा इसलिए उन्होंने उनसे निपटने के लिए अपने स्वदेशी तरीकों को तैयार कर लिया है। अब, इस बात का सम्पूर्ण आभास किया जा चुका है कि स्वदेशी ज्ञान प्रणाली आपदा प्रबंधन के लिए एक महत्त्वपूर्ण साधन बन सकती है। इसका महत्त्व इतना है कि 22 अक्तूबर 2009 को केन्द्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित आपदा प्रबंधन राष्ट्रीय नीति को ज्ञान प्रबंधन पर एक अलग अनुच्छेद समर्पित किया गया ताकि बेहतर आपदा प्रबंधन किया जा सके, तथा यह अनुच्छेद स्वदेशी ज्ञान के महत्त्व के बारे में भी बात करता है "जो प्राचीन काल से ही भारत के विभिन्न भागों में आपदाओं

का सामना करने के लिए आजमाई और परखी हुई प्रथाओं के माध्यम से दिया जाता रहा है"। स्वदेशी ज्ञान, प्रौद्योगिकीय, आर्थिक एवं परिवेष्टक आयामों से संबन्धित हो सकता है। तकनीकी आयाम बाढ़–रोधी, अस्थायी झोंपड़ियाँ बनाने के बारे में स्थानीय समझ एवं व्यावहारिक ज्ञान से संबद्ध है, जिन्हें सम्पूर्ण क्षेत्र बाढ़ के जलमग्न होने की परिस्थिति में किसी बैलगाड़ी पर बनाया जा सकता है। आर्थिक आयाम इस बात की ओर इंगित करता है कि लोग मात्र किसी एक आय के स्रोत पर आश्रित नहीं हैं तथा एक से अधिक आर्थिक गतिविधियों में संलिप्त हैं, ताकि वह बाढ़ द्वारा उनके खेत नष्ट हो जाने की परिस्थिति में विकल्पों का सहारा ले सकें। परिवेष्टक आयाम सर्वाधिक रूचिकर है जो किसी आने वाली बाढ़ के बारे में परिवेष्टक संकेत की पहचान करने के ज्ञान से संबधित है (खत्री, 2011)।

### अपनी प्रगति जांचें

9) क्या आपदाओं के दौरान स्वदेशी ज्ञान मददगार हो सकता है?

.....

.....

.....

.....

.....

## 10.3.4 शहरी संदर्भ में आपदाओं का प्रबंधन

मानव विज्ञानियों को आदिवासी क्षेत्रों एवं ग्रामीण लोगों की आबादी में काम करने के लिए जाना जाता है। हालांकि, यह मानव विज्ञानियों के बारे में सम्पूर्ण चित्र नहीं है कि वह क्या करते हैं तथा क्या करने में सक्षम हैं। शहरी क्षेत्र एवं शहरी समस्याएँ भी मानव वैज्ञानिक शोधकार्य का भाग हैं। अभी हाल में यह देखा गया कि शहरी क्षेत्रों में अस्थिर एवं अनियंत्रित विकास कार्य के कारण, मौसमी एवं मॉनसून वाली बाढ़ जैसी आपदाएँ एक बहुत ही साधारण घटनाएँ बन गयी हैं तथा वह शहरी क्षेत्रों में जीवन, संपत्ति एवं सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को बड़े पैमाने पर नुकसान पहुंचाती हैं। इसी संदर्भ में यह क्षेत्र तथा मुद्दे मानव विज्ञानियों द्वारा गहन शोधकार्य करने का आह्वान करते हैं। विलियम आइ. टोरी (1979) का मानना था कि मानव वैज्ञानिक ज्ञान एवं विधियों का उपयोग उन संगठनों का अध्ययन करने के लिए किया जा सकता है जिनका संबंध शहरी आपदाओं के साथ है। मानव वैज्ञानिक विभिन्न सरकारी एवं गैर–सरकारी संगठनों पर गहन नृजातीय अध्ययन कर सकते हैं। संगठनात्मक बनावट, निर्णय लेने की प्रक्रिया, घटनाओं को अर्थ देने की प्रक्रिया का अध्ययन तथा उन घटनाओं को आपदाओं का नाम देना एवं संकटकाल के दौरान सत्ताशाही व्यवहार का अध्ययन करने का अत्यधिक महत्त्व है। किसी संगठन को किसी आपदा की परिस्थिति में इससे अपेक्षित भूमिका एवं इसकी वास्तविक उपलब्धियों के आधार पर समझा जा सकता है। किसी संगठन की भूमिका एवं वास्तविक उपलब्धियों के बीच किसी भी प्रकार की विसंगति, यदि कोई है, का पता लगाने में एक गहन मानव वैज्ञानिक समझ सहायक हो सकती है। बदले में यह संगठनों को उनकी सीमाओं एवं कमियों पर चिंतन करने में उनकी सहायता करेगा, जिसके परिणामस्वरूप बेहतर आपदा प्रबंधन किया जा सकेगा। इसके अतिरिक्त, विश्वभर में बढ़ती आपदा के प्रकाश में, शहरी क्षेत्र ग्रामीण

क्षेत्रों की तुलना में अधिक भेद्य हैं। यह बढ़ती हुई भेद्यता इस तथ्य के कारण है कि शहरी क्षेत्रो में आबादी घनत्त्व अधिक है, जिसका अर्थ है कि जब कंक्रीट की इमारतों वाले भरे हुए स्थान यदि किसी प्रभावशाली घटना द्वारा नष्ट हुए, तो यह अत्यधिक क्षति का कारण बन सकता है। यह परिस्थिति शहरी क्षेत्रों में पड़ने वाले आपदा के प्रभाव के बारे में एक बेहतर समझ बनाने का आह्वान करती है। मानव विज्ञानी एक शहरी क्षेत्र में किसी अत्यंत विनाशकारी घटना के सामाजिक एवं आर्थिक जोखिमों को समझ सकते हैं चूंकि ऐसा वह आदिवासी क्षेत्रों में भी करते रहे हैं।

## 10.4 आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में मानवशास्त्रियों के लिए अवसर

जैसा कि ऊपर चर्चा की गयी है, मानव विज्ञानी आपदा प्रबंधन क्षेत्र में बड़े स्तर पर योगदान करते हैं। शोध करने के बारे में उनका ज्ञान एवं विधि ऐसे होते हैं जो आपदा प्रबंधन के लिए जन–केन्द्रित दृष्टिकोण से अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। गहन नृजातीय शोधकार्य द्वारा जानने का मानव वैज्ञानिक तरीका योजना बनाने एवं आपदाओं के बेहतर प्रबंधन के लिए एक संपत्ति के समान है। यही कारण है कि आपदाओं के क्षेत्र में विशेषज्ञता रखने वाले मानव विज्ञानियों के पास मनुष्य जाति संबंधी क्षेत्र में अवसर होते हैं। अंतर्राष्ट्रीय संस्थान जैसे संयुक्त राष्ट्र, आपदाओं एवं इसके परिणामों से निपटते हैं। वह तत्काल राहत पहुँचाने से लेकर दीर्घ–कालिक पुनर्निर्माण में संलिप्त होते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) एवं अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) की विनाश से निपटने के लिए शाखाएँ बनी हैं। यूएसए तथा यूके जैसे विभिन्न विकसित देशों के पास आपदा राहत एवं पुनर्वास के लिए अपने -अपने अंतर्राष्ट्रीय बलों के रूप में यूएसऐड, डिज़ास्टर ऐड यूके, एसपीए इटली एवं स्केण्डीनेविया से एसआईडीए हैं। अनेक अंतर्राष्ट्रीय एनजीओ जैसे रेड क्रॉस, रेड क्रेसेंट, केयर, डोक्टर्स विदाउट बॉडर्स, वर्ल्ड विज़न, ऑक्सफेम, सेव द चिल्ड्रेन, पेक्स इत्यादि...हैं जो आपदा राहत एवं पुनर्वास के मुद्दों के साथ निपटते हैं (होफ़मेन, 2013)।

संस्थान जैसे कि नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिज़ास्टर मैनेजमेंट (एनआईडीएम), टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइन्सेज़ (टीआईएसएस), तथा अनेक भारतीय विश्वविद्यालय जहां आपदा प्रबंधन पर अध्यापन किया जाता है, जो इस विशेष विषय क्षेत्र में प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु लोगों के लिए विशाल अवसरों का द्वार खोलते हैं। कुछ अंतर्राष्ट्रीय परियोजनाएं हैं जो संपूर्णतः आपदाओं के अध्ययन को समर्पित हैं जैसे यूरोपियन यूनियन 6थ फ्रेम्वर्क परियोजना जिसका शीर्षक –"इंटेग्रटेड हैल्थ सोशल एंड इकनॉमिक इम्पेक्ट्स ऑफ एक्सट्रीम इवेंट्सः एविडेन्स, मेथड्स एंड टूल्स" है, जिसमें मानव विज्ञानी शोधकार्य दल के सदस्यों एवं समन्वयकों के रूप में थे। अतः, आपदा प्रबंधन का क्षेत्र अत्याधुनिक, पथप्रदर्शक शोधकार्य तथा समाज सेवा के लिए एक अद्वितीय अवसर प्रदान करता है, जहां पर आप इस पृथ्वी को रहने के लिए एक बेहतर स्थान बनाने की ओर अपना योगदान कर सकते हैं।

### अपनी प्रगति जांचें

10) आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में कार्यरत कुछ संगठनों का नाम बताएं जिनके साथ मानव विज्ञानी जुड़े हुए हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

## 10.5 सारांश

इस इकाई में हमने देखा की कैसे मानवविज्ञान एक विषय के रूप में आपदा प्रबंधन के क्षेत्र के लिए महत्त्वपूर्ण है। विश्व भर में आपदाओं की आवृत्ती बढ़ रही है तथा इन घटनाओं के कारण होने वाली क्षति भी जीवन एवं संपत्ति, दोनों ही अर्थों में बढ़ रही है। आपदाएँ व्यापक घटनाएँ होती हैं जो मानवीय अस्तित्त्वों एवं चेतना को विभिन्न आयामों में प्रभावित करती हैं। ऐसा आभास किया गया है आगे जाकर मात्र तकनीकी उपाय ही आपदाओं एवं इसके परिणामों से मानव जाति को बचाने में सहायक सिद्ध नहीं होंगे। आपदाओं से निपटने तथा आपदाओं को उनकी समग्रता के रूप में समझने के लिए एक अधिक अंतर–विषयी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। यह इकाई आपको आपदा प्रबंधन क्षेत्र में मानव वैज्ञानिक योगदान को समझने एवं उसको मान्यता प्रदान करने में सहायता प्रदान करेगी। मानव विज्ञानियों ने विश्वभर में विभिन्न स्थानों पर काम करते हुए प्राप्त किए गए ज्ञान को आपदा प्रबंधन के चुनौतीपूर्ण विषय क्षेत्र को समझने के लिए प्रयोग किया है।

## 10.6 संदर्भ

Das V. (1995).*Critical Events: An Anthropological Perspective on Contemporary India*. New Delhi: Oxford University Press.

D'Souza R. (2006). *Drowned and Dammed: Colonial Capitalism and Flood Control in Eastern India*. New Delhi: Oxford University Press.

Guha-Sapir D., Parry L.V., Degomme O., Joshi P.C., and Saulina Arnould J.P., (2006). *Risk Factors for Mortality and Injury: Post-Tsunami Epidemiological Findings from Tamil Nadu.*CRED. Belgium.

Hoffman S.M. (2013). "Becoming a Practicing Disaster Anthropologist". In Riall W. Nolan (ed.). *A Handbook of Practicing Anthropology*. UK: Wiley-Blackwell.

Joshi P.C., Guha-Sapir D., and Srivastava V.K. (2010). "A Qualitative Account of the Impact of Disaster: The Case of Flooding in Bahraich Uttar Pradesh". In *The Eastern Anthropologist.* 63:3-4. Pp. 479-492.

Kapur A. (2010). *Vulnerable India: A Geographical Study of Disasters*. New Delhi and Shimla: Sage and IIAS.

Khattri P. (2011). *Social Impacts of Disaster: An Anthropological Perspective*. Unpublished Ph.D. Thesis.Department of

Anthropology.University of Delhi.

*National Policy on Disaster Management*.(2009). Ministry of Home Affairs.National Disaster Management Authority.Government of India. (The policy is available online, on the website of National Institute of Disaster Management [NIDM] http://nidm.gov.in/policies.asp)

Oliver-Smith Anthony and Hoffman Sussana M (ed.). (1999). *The Angry Earth: Disaster In Anthropological Perspective.* New York: Routledge.

Simpson E. (2014). *The Political Biography of an Earthquake: Aftermath and Amnesia in Gujarat, India*. New Delhi: Oxford University Press.

*The Disaster Management Act.* (2005). (The act is available online, on the website of National Institute of Disaster Management [NIDM] http://nidm.gov.in/policies.asp)

Torry William.I. (1979). "Anthropological Studies in Hazardous Environments: Past Trends and New Horizons". *Current Anthropology*.Volume 20. No.3. pp 517-529.

Trostle J. (2005). *Epidemiology and Culture*. UK: Cambridge University Press.

Wisner, B., Blaikie, P., Cannon, T., & Davis, I. (2004). *At risk: Natural hazards, people's Vulnerability and Disaster.*(2nd edition). London: Routledge.

## 10.7 आपकी प्रगति की जाँच के लिए उत्तर

1) उत्तर हेतु अनुभाग 10.0 देखें।
2) अनुभाग 10.0 में दूसरा अनुच्छेद देखें।
3) अनुभाग 10.0 में तीसरा अनुच्छेद देखें।
4) उत्तर हेतु अनुभाग 10.1 देखें।
5) अनुभाग10.2 देखें।
6) उत्तर हेतु अनुभाग10.2.1 देखें।
7) आपदा के चार कारण हैं प्राकृतिक, मानव–निर्मित, दुर्घटना एवं उपेक्षा।
8) समुदाय आधारित आपदा के लिए तैयारियां (CBDP), सूचना, शिक्षा एवं संचार (IEC), स्वदेश ज्ञान तथा नीति एवं वकालत ऐसे कुछ क्षेत्र हैं जिनमें मानव वैज्ञानिक अपना योगदान करते रहे हैं।
9) अनुभाग 10.3.3 देखें।
10) अनुभाग 10.4 देखें।